जो आउटपुट है, अगर वो अच्छा है तो समझो आपका शरीर अच्छा है। आउटपुट के आधार से क्या खाना है वो डिसाइड होता है, और आपने क्या खाया है वो पता चलता है। इसलिए हम सभी इस बात से अवेयर हो जाएं कि हमारा सबकुछ एक मनोवैज्ञानिक आराम से जान सकता है, सिर्फ आपके शरीर और शरीर के अंगों का ठीक होना या न होना देखकर। हम कुछ भी छिपा नहीं सकते, और ये दवाई सिर्फ और सिर्फ एक प्लेसबो इफेक्ट का ही काम करती है, जिससे आपको लगता है कि मैं ठीक हो रहा हूँ। लेकिन ये सिर्फ एक मनोवैज्ञानिकता है, ना कि कुछ और।

मन की चिकित्सा मन द्वारा

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

होम्योपैथी में मेरे विश्वास का मुख्य कारण इसका भौतिक ना होकर आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति होना है। यह पद्धति भौतिकवाद पर आश्रित न होकर आध्यात्मिकता पर आश्रित है। मनुष्य का जो स्थूल शरीर हमें दिखता है, उस पर सूक्ष्म तत्वों का अमिट प्रभाव पड़ता है। चाहे कोई कितना भी आज की दुनिया में मॉडर्न हो, वह भी इस बात से इंकार नहीं कर सकता। एक उदाहरण यह है कि जब किसी व्यक्ति को पता चला कि उसका घर जल गया है तो उसे लकवा मार गया। अर्थात् पक्षाघात हो गया। आप देखिए, गुस्सा आते ही शरीर थर-थर काँपने लगता है। कई बार डर के कारण हार्ट अटैक भी आ जाता है। स्थूल देह पर इन सूक्ष्म मनोभावों का इतना भयंकर परिणाम क्यों होता है? हमारा मानना है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि स्थूल का नियंत्रण सूक्ष्म से तथा अभौतिक द्वारा भौतिक का नियंत्रण हो रहा है। जो कोई भी शरीर में हलचल होती है उसका कारण सूक्ष्म है। मन कहता है कि ये देह कर रहा है, परंतु ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। सभी चिकित्सा पद्धतियों में होम्योपैथी एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो इस आध्यात्मिक सच्चाई को पकड़ पाती है। भारत का अध्यात्म शास्त्र कहता है कि मन ही मानव के रोग में बंध जाने का कारण है। इसी सत्य को आधार मानकर होम्योपैथी कहता है कि स्थूल शरीर को ताकत देने वाला सूक्ष्म शरीर है जिसे अंग्रेजी भाषा में वाइटल फोर्स कहते हैं। जिसे भारतीय आध्यात्मिक शास्त्र में कारण शरीर या कैजुअल बॉडी कहते हैं। इसी बॉडी के आधार से हमारा स्थूल शरीर चलता है। रोग का प्रारंभ हमारे कारण शरीर में या सूक्ष्म शरीर में जीवनी शक्ति जिसे हम वाइटल फोर्स कहते हैं, में होता है। जैसे ही सूक्ष्म शरीर हमारा स्वस्थ हो जाता है वैसे ही हम भी स्वस्थ हो जाते हैं। इसलिए यह चिकित्सा मोडालिटीज़ या व्यक्ति की प्रकृति के आधार से काम करती है। हालांकि यह पद्धति बहुत धीरे-धीरे कार्य करती है इसलिए सभी इसको पसंद नहीं करते। आप एलोपैथी से जल्दी ठीक नहीं होते हैं, बस थोड़ी देर के लिए हीलिंग हो जाती है। होम्योपैथी में देरी ज़रूर लगती है लेकिन यह जड़ से बीमारी को नष्ट कर देती है। दुबारा उस बीमारी के ना होने के चांसेस बढ़ जाते हैं। निरंतर मन में उठने वाले दुःख, शोक, तकलीफ के कारण ही बीमारियों का आज जन्म हो रहा है। जीवन में होने वाली परेशानियों का आज किसी के पास समाधान हो नहीं सकता, सिवाय आध्यात्मिकता के। समय हमारे अनुकूल नहीं रहेगा, हमें उसे अपने अनुकूल करना पड़ेगा। यही सच है। होम्योपैथी का मात्र एक उदाहरण है, लेकिन मानसिक रूप से विक्षिप्त इंसान के लिए मेडिकल साइंस के पास कोई भी दवाई नहीं है। आज मात्र परमात्मा का सहारा ही चाहिए, जो हमें इन बातों से निकाल सकता है।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा 21 साल का बेटा अचानक ही एक्सीडेंट में चला गया। हम उसे भूल नहीं पा रहे हैं, कैसे भूलें?

उत्तर : बात तो बहुत बड़ी है। माँ-बाप अपने 21 साल के बच्चे को अचानक, जो अभी था और अभी नहीं है, बहुत बुरा इफेक्ट मानसपटल पर आता है। अब देखिये ये घटना हो गई है उसको वापिस नहीं लाया जा सकता, इसलिए उसे आत्मा देखकर शांति का दान दें। वो जहाँ भी होगा उसे शांति प्राप्त होगी और आपका चित्त भी शांत हो जायेगा। एक चीज़ मैं हमेशा कहता हूँ कि एक्सीडेंट से मरने वालों को बहुत जल्दी पुर्नजन्म नहीं मिलता लेकिन अगर आप उसे योग का दान देंगे तो उसका पुर्नजन्म जल्दी से जल्दी हो जायेगा। तो अब आपका उससे सच्चा प्यार है तो ये काम आपको करना है। बाकी धीरे-धीरे भूल जायेगा, ये तो नेचुरल है। नहीं तो इनके और दूसरे बच्चों के भविष्य पर असर आयेगा। इसलिए राजयोग में, पुण्य कर्मों में, सेवा में लग जायें तो धीरे-धीरे भूल जायेंगे।

प्रश्न : मेरे पति को शरीर छोड़े एक साल हो गया है और उनसे तीन महीने पहले ही मेरे 18 साल के बेटे ने भी शरीर छोड़ दिया। परमात्मा तो मुझे मिल गये हैं लेकिन अब इस बात को लेकर मन में प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों हुआ? मैं भूल नहीं पा रही हूँ। योग नहीं लगता, बाबा के कमरे में जाती हूँ तो रोना आता है। मैं क्या करूँ ?

उत्तर : ये बहुत ही दुःखद घटना है, निश्चित रूप से एक नारी के लिए पति का जाना और फिर जवान बच्चे का जाना। चलो आपको ज्ञान मिल गया, भगवान मिल गया। तो आपको ये करना है कि उन दोनों को गुड वायब्रेशन दें और उनसे माइंड टू माइंड बात किया करें जैसे वो साकार रूप में आपके सामने हैं। तो आप सन्तुष्ट भी होंगे और बाबा से ऐसा योग लगायें, जहाँ भी वो आत्मायें जन्म लेकर जायें वहाँ वो श्रेष्ठ स्थिति में रहे। उनकी श्रेष्ठ गति हो। जो हो गया अब उसको तो वापिस नहीं किया जा सकता, लेकिन आपको अपने को सम्भालना तो है। ताकि आप अपने भविष्य को, दूसरे बच्चों के भविष्य को सुन्दर बना सकें।

प्रश्नः आपने जैसे एक ऐपीसोड में बताया था कि बच्चे मैथ के प्रति बहुत भागते हैं। मेरी बेटी जो आठवीं क्लास में पढ़ती है उसका भी यही हाल है, तो क्या करना चाहिए?

उत्तरः मानो मैथेमेटिक्स में ही कोई बच्चा कमज़ोर है या बहुत बोर फील करता है मैथ में, उनको मैथ को देखते ही लगता है कि ये पता नहीं क्या है, मेरे बस का नहीं है। तो कारण क्या है जो मैथेमेटिक्स से रिलेटेड जो केन्द्र है ना ब्रेन में, वो डल है, वो ब्लॉक है, हमें उसको खोलना है। तो जब वो उठे तो पहला संकल्प उससे कराना है कि मैं बुद्धिवान हूँ, तीन बार कराओ। भले मुख से बुलवाओ, मैं बुद्धिवान हूँ। इससे उनकी बुद्धि में जो कुछ भी ब्लॉकेज हैं, वो खुलने लगेंगे। 21 दिन तक ये काम कराने हैं। जैसे मैथेमेटिक्स की बात है या दूसरे किसी भी सब्जेक्ट की, आई लव मैथेमेटिक्स, मुझे मैथेमिटक्स में बहुत इंटरेस्ट है। मैं मैथेमेटिक्स में बहुत जल्दी होशियार हो जाऊंगी। ऐसे संकल्प तीन-तीन बार करा दें उनसे। तो मैथेमेटिक्स से रिलेटेड जो केन्द्र है वो खुलने लगेगा और आप देखेंगे उसको मैथेमेटिक्स में रूचि हो जायेगी और सबकुछ ठीक हो जायेगा।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

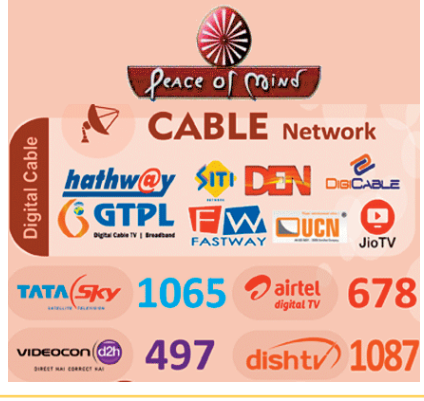

प्रश्न : मैं बीना सिंह हूँ। जैसे कि आपने बताया था कि एक नवजात शिशु जन्म से हार्ट पेशेन्ट था, तो वो उसके पूर्व जन्म का दोष था कि पिछले जन्म में भी वो हार्ट पेशेन्ट था। तो इस जन्म में भी वो हार्ट पेशेन्ट बनकर आया। लेकिन जितना अभी तक मैंने सुना और समझा है तो लोगों ने ये बताया है कि बीमारी आत्मा को नहीं बल्कि शरीर को होती है और जब शरीर से आत्मा निकलती है तो वो बीमारी शरीर में ही रह जाती है ना कि आत्मा के साथ जाती है, तो सच क्या है?

उत्तरः इस आत्मा के साथ और इस शरीर के अन्दर एक सूक्ष्म शरीर भी होता है जो दोनों को इंटरैक्ट कराता है। शरीर जो दिखता है और आत्मा जो यहाँ नहीं दिखती, उन दोनों के बीच में एक सूक्ष्म शरीर भी होता है। तो ये जो बीमारियां इस स्थूल शरीर में होती हैं, उसका सूक्ष्म अंश सूक्ष्म शरीर में भी जाता है। तो जब आत्मा शरीर छोड़कर दूसरे गर्भ में जाती है तो वो अकेली नहीं जाती, सूक्ष्म शरीर को लेकर जाती है। इसलिए वो बीमारियां उस शरीर में ट्रांसफर हो जाती हैं।

प्रश्नः मेरे बच्चे के दिल में छेद है तो उसको कैसे ठीक किया जा सकता है?

उत्तरः आपको ये विधि अपनानी होगी जो मैं बताता हूँ कि अपने दोनों हाथों को आपस में घर्षण करें और कहें मैं बहुत शक्तिशाली आत्मा हूँ। इसके लिए हम एक शब्द यूज़ करते हैं वो ये कि भगवान ऑलमाइटी है, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तो वो शक्तियां हाथों से निकलने लगेंगी। जहाँ भी आप हाथों को रखेंगे, हार्ट पर रखेंगे तो हार्ट काम करेगा, किडनी पर रखेंगे तो किडनी, लीवर पर रखेंगे तो लीवर, ब्रेन पर रखेंगे तो ब्रेन, सबके लिए ये एक ही तरीका है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com